भाषा, व्याकरण एवं लिपि का परिचय

DATE: / /
PAGE NO.:

भाषा :-

'मनुष्यों द्वारा अपने विचार, भावनाएँ, संदेश व सूचनाएँ अभिव्यक्त करने का माध्यम भाषा कहलाता है। प्राणियों द्वारा मौखिक, लिखित या सांकेतिक रूप से अपने विचार प्रकट करने का माध्यम ही भाषा है।

भाषा के दो प्रकार - (1) मौखिक भाषा
(2) लिखित भाषा

(1) मौखिक भाषा -

जब कोई प्राणी बोलकर अपने विचार समझाता है तो यह भाषा का मौखिक माध्यम होता है। इस माध्यम के लिए ध्वनि की आवश्यकता होती है।

(2) लिखित भाषा -

जब कोई प्राणी अपने विचारों को लिखकर समझता व समझाता है तो यह भाषा का लिखित माध्यम होता है।
लिखित भाषा ही भाषा का स्थायी रूप होती है

भाषा का एक अन्य प्रकार -
(1) सांकेतिक भाषा -

जब कोई प्राणी अपने विचारों को संकेतों के माध्यम से समझता है तो यह ~~भाषा का~~ सांकेतिक भाषा कहलाती है।

⇒ 'भाषा' शब्द की व्युत्पत्ति -

'भाषा' शब्द संस्कृत की 'भाष्' धातु से बना है। 'भाष्' धातु का अर्थ है - 'व्यक्त वाणी'

By Chaila Sir

DATE : / /

PAGE NO. :

- भाषा की अन्य परिभाषा -

विचार ~~भाव~~ व्यक्त करने, मनोभावों को कहने तथा मनोभावों को प्रकाशित करने के साधन को भाषा कहते है।

- महाभाष्यकार पतंजलि ने कहा -

मनुष्यों की व्यक्त वर्णात्मिक वाणी ही भाषा कहलाती है।

- ध्वन्यात्मक शब्दों के द्वारा विचारों का प्रकटीकरण ही भाषा कहलाता है।

⇒ भाषा की इकाइयाँ - भाषा की पाँच इकाइयाँ है।

(1) ध्वनि :- हमारे मुख से निकलने वाली प्रत्येक स्वतंत्र आवाज 'ध्वनि' कहलाती है।

(2) वर्ण :- मुख से उच्चरित स्वर - व्यंजन ध्वनियाँ जब लिखित रूप में प्रयुक्त होती है, उसे वर्ण कहते है।

(3) शब्द :- वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते है।

(4) पद - वाक्य में प्रयुक्त ~~शब्द~~ विभक्ति - युक्त शब्द को 'पद' कहते है।

(5) वाक्य - शब्दों के मेल से जब एक पूर्ण विचार प्रकट होता है, तो वह शब्द समूह वाक्य कहलाता है।

By Chalia Sir

⇒ **बोली —**

भाषा के उस रूप को बोली कहा जाता है जो एक सीमित क्षेत्र में बोली जाती है।

- भाषा का सीमित, अविकसित तथा आम बोलचाल वाला रूप बोली कहलाता है।

- हिन्दी भाषा के परिवार में लगभग 18 बोलियाँ सम्मिलित है।

- हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ —

(1) पूर्वी हिन्दी — इसमें अवधी, बघेली तथा छत्तीसगढ़ी शामिल है।

(2) पश्चिमी हिन्दी — खड़ी बोली, ब्रज, बाँगरू (हरियाणवी), बुंदेली तथा कन्नौजी बोलियाँ शामिल है।

(3) बिहारी — मगही, मैथिली, भोजपुरी।

(4) राजस्थानी — मेवाड़ी, मारवाड़ी, मेवाती, हाड़ौती, बागड़ी मेवाती, शेखावाटी।

(5) पहाड़ी — गढ़वाली, कुमाऊँनी, मंडियाली।

- 14 सितम्बर 1949 ई. को हिन्दी भाषा भारत की राजभाषा स्वीकार की गई।
- 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है।
- 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस मनाया जाता है।
- शुरुआत में 14 भाषाएँ थी।
- वर्तमान में कुल 22 भाषाएँ है।
- भाषाओं का उल्लेख अनुच्छेद 343 से 351 में किया गया है।
- हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी लिपि है।
- हिन्दी फारसी भाषा का शब्द है।

By Chanda Sir

DATE : / /
PAGE NO. :

⇒ व्याकरण –

- व्याकरण भाषा का एक सम्पूर्ण शास्त्र है।
- व्याकरण शब्द अर्थ है – 'विश्लेषण'

परिभाषा – भाषा को शुद्ध रूप मे लिखने तथा बोलने से सम्बन्धित नियमों का ज्ञान जिससे होता है, उसे व्याकरण कहते है।

⇒ व्याकरण के अंग – चार अंग होते है।

(1) वर्ण विचार :- इसके अन्तर्गत वर्णों से सम्बन्धित उनके आकार, उच्चारण-स्थान तथा वर्गीकरण के अलावा उनसे बने शब्द-निर्माण की प्रक्रिया का उल्लेख होता है।

(2) शब्द-विचार :- इसमें शब्द के भेद, उत्पत्ति तथा रचना आदि के साथ शब्द के प्रकारों का विवेचन होता है।

(3) पद-विचार :- इसमे शब्द से पद-निर्माण, विकारक तत्व तथा पद के विविध रूपों का उल्लेख रहता है।

(4) वाक्य-विचार :- इसमें वाक्य से सम्बंधित ~~स्व~~ उसके भेद, उपभेद, विश्लेषण, संश्लेषण और वाक्य-निर्माण आदि की जानकारी दी जाती है।

⇒ लिपि :-

भाषा की ध्वनियों को लिखने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हे लिपि कहते है।

- प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि होती है।

हिन्दी – देवनागरी, अंग्रेजी – रोमन
उर्दू – फारसी पंजाबी – गुरुमुखी

By Challasir

DATE : / /

PAGE NO. :

- देवनागरी लिपि का प्रयोग हिन्दी, मराठी, नेपाली, कोंकणी, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं में होता है।

⇒ देवनागरी लिपि :-

भारत की दो प्राचीन लिपियाँ थी - ब्राह्मी लिपि और खरोष्ठी लिपि।

ब्राह्मी लिपि से ही देवनागरी लिपि का विकास हुआ।

- देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषताएँ :-

(1) यह बाईं से दाईं ओर लिखी जाती है।
(2) उच्चारण के अनुरूप लिखी जाती है।
(3) सम्पूर्ण लिपि-समूह स्वर और व्यंजन में विभक्त हैं।
(4) एक वर्ग के वर्णों का उच्चारण एक स्थान से होता है।
(5) शिरोरेखा का प्रयोग होता है।
(6) अनुनासिक और अनुस्वार ध्वनियों के लिए पृथक चिह्न हैं।
(7) वर्णों की स्पष्टता है।
(8) यह रोमन लिपि की अपेक्षा कम स्थान घेरती है।
(9) वर्ण-विभाजन में वैज्ञानिकता है।

⇒ विशेष -

⇒ भाषा का शरीर शास्त्र व्याकरण है।

⇒ हिन्दी भाषा में कुल वर्ण ५२ हैं।

⇒ हिन्दी के बाद भारत में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बांग्ला है।

⇒ केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान मैसूर में स्थित है।

⇒ सभी भारतीय भाषाओं की सूत्र भाषा संस्कृत भाषा है।

⇒ भाषा परिवर्तनशील है, और भाषा में यह परिवर्तन धीरे-धीरे होता है।

⇒ भाषा सूक्ष्म है, लिपि स्थूल है।

By Chalo Sir

शब्द शक्ति

⇒ शब्द शक्ति का अर्थ - "शब्द की अभिव्यंजक शब्द"
(प्रकट करने वाली)

परिभाषा :-

1. शब्द के अर्थ को जिस माध्यम से ग्रहण किया जाता है, वह माध्यम शब्द शक्ति कहलाता है।
2. शब्द में निहित अर्थ को प्रकट करने वाले व्यापार को शब्द शक्ति कहा जाता है।
3. शब्दों में अन्तर्निहित अर्थ को प्रकट करने वाले व्यापार को शब्द ~~शब्द~~ शक्ति कहते हैं - भट्टनायक
4. वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ जानने के लिए बुद्धि द्वारा जिस शक्ति का प्रयोग होता है, उसे शब्द-शक्ति या शब्द-वृत्ति कहते है।

⇒ शब्द के प्रकार :- शब्द के तीन प्रकार होते है।

(1) वाचक - वक्ता द्वारा बोले गए वाक्य का सीधा अर्थ ग्रहण करना वाचक कहलाता है। वाचक से निकलने वाला अर्थ 'वाच्यार्थ या मुख्यार्थ' कहलाता है।

उदा० - मैं राजस्थानी हूँ।

(2) लक्षक - वक्ता द्वारा बोले गए शब्द का लक्षणों के आधार पर अर्थ ग्रहण किया जाए, वहाँ लक्षक कहलाता है।
लक्षक से निकलने वाला अर्थ 'लक्ष्यार्थ' कहलाता है।

उदा० - मैं राजस्थानी हूँ। (राजस्थान की संस्कृति व भाषा के आधार पर)

(3) व्यंजक - जहाँ वक्ता का भाव लक्षणों द्वारा भी अभिव्यक्त नहीं हो सकता और अन्य अर्थ की कल्पना करनी होती है, वहाँ व्यंजक कहलाता है।
व्यंजक से निकलने वाला अर्थ 'व्यंग्यार्थ' कहलाता है।

By Chalia Sir

उदा० - सावधान ! मैं राजस्थानी हूँ।

⇒ शब्द-शक्ति के भेद -(तीन)

(1) अभिधा शब्द शक्ति (2) लक्षणा शब्द शक्ति (3) व्यंजना शब्द शक्ति

(1) अभिधा शब्द शक्ति :-

- जिस शक्ति के द्वारा साक्षात् संकेतित अर्थ का बोध होता है, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते है।
- मुख्यार्थ का बोध कराने वाली शक्ति को अभिधा शब्द कहा जाता है।
- वाक्य या कविता में प्रयोग किये जाने पर जब कोई शब्द अपने मुख्य अर्थ, लोकप्रचलित अर्थ, शब्दकोशीय अर्थ, साक्षात् संकेतित अर्थ को प्रकट करता हैं तो उसे वाचक शब्द कहते है, उसके द्वारा प्रकट करने वाले अर्थ को वाच्यार्थ कहते है, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते है।

(शब्द - वाचक) (अर्थ - वाच्यार्थ, मुख्यार्थ, सांकेतित अर्थ)

⇒ अभिधा शब्द शक्ति के भेद - वाचक शब्द तीन प्रकार के होते है।

(1) रूढ़ शब्द (2) यौगिक शब्द (3) यौगरूढ़ शब्द

(1) रूढ़ शब्द :- वे शब्द जो एक हो तथा अर्थ भी एक ही हो (संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय) के आधार पर टुकडे न हो रूढ़ शब्द कहलाते है। जैसे - दिन, दिवस, धूप, पहाड़, घोड़ा, जल, ठण्डा, गाय आदि।

(2) यौगिक शब्द :- जो शब्द प्रकृति और प्रत्यय के योग से निर्मित हो यानि दो शब्दों से बना हो लेकिन तीसरा अर्थ न निकले यौगिक शब्द कहलाते है। जैसे - विद्यालय, पाठशाला, ~~ऐसा~~ रसोईघर, पुस्तकालय आदि।

By Chalia Sir

(3) यौगरूढ़ शब्द :- वे शब्द जो किसी तीसरे अर्थ के लिए रूढ़ हो (बहुव्रीहि समास) के उदाहरण यौगरूढ़ शब्द कहलाते है।

जैसे - दशानन, वीणापाणि, लम्बोदर आदि।

⇒ अभिधा शब्द शक्ति के उदाहरण :-

(1) राम पुस्तक पढ़ता है।
(2) किसान खेत में ~~ह~~ हल चलाता है।
(3) बालक प्रतिदिन विद्यालय जाता है।
(4) सजना है मुझे सजना के लिए।
(5) विद्यार्थी पढ रहे हैं।
(6) घोड़ा सवारी के काम आता है।
(7) चमेली का पुष्प श्वेत रंग का सुगन्धित पुष्प है।
(8) लक्षित पुस्तक पढ रहा है।
(9) पुरुष की भीरुता की बुरी निन्दा करते है।

⇒ लक्षणा शब्द शक्ति :-

मुख्यार्थ में बाधा होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन के कारण जिस शक्ति द्वारा मुख्यार्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ (लक्ष्यार्थ) ग्रहण किया जाता है, उसे लक्षणा शब्द शक्ति कहा जाता है।

जैसे :- मोहन गधा है। (यहाँ गधे का लक्ष्यार्थ है मूर्ख)
- राधा तो निरी गाय है। (यहाँ गाय सीधी-सादी अर्थ में)
- सुरेश हॉकी खेलते समय हवा में बातें करता है। (तेज चलने का भाव)

⇒ लक्षणा शब्द शक्ति के लिए आवश्यक तीन बातें :-

(1) शब्द के मुख्य अर्थ (मुख्यार्थ) में बाधा पड़े -
जैसे :- 'गंगा पर घर है' इस वाक्य में 'गंगा पर' शब्द का मुख्यार्थ है - गंगा नदी का प्रवाह, लेकिन जल-प्रवाह पर घर नहीं हो सकता, अतः यहाँ ~~में~~ ~~बाधा~~ मुख्यार्थ में बाधा है।

(2) शब्द के मुख्य अर्थ से संबंधित कोई अन्य अर्थ लिया जाए –

– मुख्यार्थ में बाधा उपस्थित होने पर लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है लेकिन लक्ष्यार्थ का मुख्यार्थ से संबंध होना आवश्यक है। इसी को मुख्यार्थ का योग कहते है। जैसे- 'गंगा पर घर है'

वाक्य में 'गंगा पर' का लक्ष्यार्थ 'गंगा के तट पर' लिया जाता है।

(3) उस अन्य अर्थ (लक्ष्यार्थ) को ग्रहण करने के पीछे कोई रूढ़ या विशेष प्रयोजन हो।

उदा॰ – (1) वह लड़का शेर है। (वाक्य में लड़के को शेर कहने से 'शेर' का अर्थ साहसी या वीर लिया गया है।

(2) यह लड़की तो गाय है। (लड़की को गाय कहने से 'गाय' का अर्थ सीधी सरल स्वभाव से है।)

(3) रमेश का घर मुख्य सड़क पर है। (रमेश का घर मुख्य सड़क अर्थात सड़क के मध्य में नहीं हो सकता, अतः सड़क के किनारे पर उससे निकट अर्थ के लिये ऐसा कहा गया है)

⇒ लक्षणा शब्द शक्ति के भेद – (दो)

(1) रूढ़ा लक्षणा (2) प्रयोजनवती लक्षणा

(1) रूढ़ा लक्षणा :– जब किसी रूढ़ि या प्रचलन के कारण मुख्यार्थ को छोड़कर कोई अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है, तब वहाँ रूढ़ा लक्षणा मानी जाती है।

जैसे :– राजस्थान वीर है।

प्रस्तुत वाक्य में राजस्थान का मुख्यार्थ है - राजस्थान राज्य। परन्तु यहाँ इस अर्थ की बाधा है क्योंकि राजस्थान तो जड़ है, वह वीर कैसे हो सकता है। इस स्थिति में इसका यह लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है कि राजस्थान के लोग वीर है।

By Chalia Sir

⇒ अन्य उदाहरण :-

(1) महाराष्ट्र साहसी है।
(2) पंजाब शेर है।
(3) कलिंग साहसी है।
(4) वहाँ लाठियाँ चल रही हैं।
(5) इंग्लैण्ड दो विकेट से हरा।
(6) इस बुढ़िया को न सताओ, यह तो निरी गाय है।

(2) प्रयोजनवती लक्षणा :- जब मुख्यार्थ ~~बे~~ के बाधित होने पर किसी प्रयोजन के द्वारा अर्थ ग्रहण होने पर प्रयोजनवती लक्षणा होती है।

जैसे:- 'श्वेत दौड़ रहा है।' (प्रस्तुत वाक्य में श्वेत का मुख्यार्थ 'सफेद रंग' बाधित है क्योंकि वह दौड़ कैसे सकता है। इसका लक्ष्यार्थ है - 'श्वेत रंग का घोड़ा दौड़ रहा है')। अर्थात किसी घुड़दौड़ प्रतियोगिता के दौरान यह वाक्य बोला जाता है, तो श्रोता इसका यह अर्थ ग्रहण कर लेता है कि सफेद रंग का घोड़ा दौड़ रहा है।' इस प्रकार किसी प्रयोजन विशेष (घुड़दौड़) से यह अर्थ ग्रहण करने के कारण यहाँ प्रयोजनवती लक्षणा है।

उदा०- (1) भाले प्रवेश कर रहे हैं।
(2) लाल पगड़ी आ रही है।
(3) बन्दूकें चलने लगी।

⇒ लक्षणा शब्द शक्ति के अन्य उदाहरण -

(1) बाजार में एक जादू है, वह जादू आँख की राह काम करता है।
(2) ~~निकम्म~~ निकम्मे रहकर मनुष्यों की चिन्तन-शक्ति थक गई है।
(3) कुत्ते तो भौंकते ही रहते है।
(4) कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती है।
(5) हमारा नौकर तो एकदम गाय है।

By Chalia Sir

(3) व्यंजना शब्द शक्ति :-

जब किसी शब्द का वाच्यार्थ / मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ से भी अर्थ न निकले तब उसका बोध कराने वाली तीसरी शब्द शक्ति व्यंजना शब्द शक्ति कहलाती है।

जैसे :- किसी ने अपने साथी से कहा कि -

"संध्याकाल के छह बज गये है" इस वाक्य में छह बजे के अनेक अर्थ लिए जा सकते है -

(1) घर जाने का समय हो गया।

(2) मन्दिर में आरती का समय हो गया।

(3) गाय के दुहने का समय हो गया।

(4) खेलने का समय हो गया।

- सूरज डूब गया -

(1) खेत से घर जाने का समय

(2) पूजा पाठ का समय

(3) खाना बनाने का समय

⇒ व्यंजना शब्द शक्ति के भेद - (दो)

(1) शाब्दी व्यंजना (2) आर्थी व्यंजना

(1) शाब्दी व्यंजना :-

जहाँ शब्द विशेष के कारण व्यंग्यार्थ का बोध होता है। और वह शब्द हटा देने पर व्यंग्यार्थ समाप्त हो जाता है, वहाँ शाब्दी व्यंजना होती है।

उदा० - (1) उस नारी की आँखे मानो मृगनयनी हों।

(2) भगवान शिव को नीलकंठ कहा जाता है।

(3) वह लड़की सचमुच चन्द्रमुखी लग रही थी।

= इन उदाहरणों में मृगनयनी, नीलकंठ और चन्द्रमुखी शब्द के स्थान पर पर्यायवाची शब्द रखने पर व्यंग्यार्थ समाप्त हो जाता है, इस कारण शाब्दी व्यंजना होती है।

By Chalia Sir

(2) आर्थी व्यंजना —

जब व्यंजना किसी शब्द पर आधारित न होकर अर्थ पर आधारित होती है तब आर्थी व्यंजना होती है।

उदा० - ~~सागर कूल मीन तड़पत है, हुलसि होत जल~~

(1) कुम्हार बोला — "बेटी बादल हो रहे हैं"।

इस वाक्य मे भिन्न-भिन्न व्यंग्यार्थ निकल रहे हैं, - जैसे
बर्तन अन्दर ले लो। मिट्टी गीली हो जायेगी।
हमें बाहर नहीं जाना चाहिए।

(2) दस बजे गए हैं। -

- विद्यालय की घंटी बजने वाली है।
- बस आने का समय हो गया है।
- पिताजी कार्यालय जाने वाले हैं।

By Chalia Sir

youtube - chalia smart study website - Jobstudyhub.com

अलंकार

⇒ अलंकार शब्द संस्कृत धातु अलम् + कार से बना है।
(शोभा) (करने वाला)

⇒ अलंकार शब्द का सामान्य अर्थ आभूषण है।

⇒ अलंकार शब्द का साहित्यिक अर्थ - काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्व

⇒ जिस प्रकार शरीर की शोभा बढ़ाने के लिए आभूषण धारण किए जाते है, उसी प्रकार काव्य की शोभा वृद्धि के लिए अलंकार प्रयोग किए जाते है।

दण्डी :- ~~काव्यशोभाख्य~~:
" काव्य शोभाकरान धर्मान अलंकारान् प्रचक्षते।"
अर्थात् काव्य को सौन्दर्य प्रदान करने वाले धर्म ही अलंकार कहलाते है। (काव्यादर्श)

- काव्य की सौन्दर्य -वृद्धि करने वाले धर्म ही अलंकार है।

⇒ आचार्य शुक्ल :- ' भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप, गुण और क्रिया का तीव्र अनुभव करने में कभी - कभी सहायक होने वाली उक्ति ही अलंकार है।

⇒ अलंकार के भेद :-

- अलंकार के तीन भेद माने ~~जाते~~ गए है -
(1) शब्दालंकार (2) अर्थालंकार (3) उभयालंकार

(1) शब्दालंकार = जहाँ शब्दों या वर्णों के सुन्दर प्रयोग से काव्य का सौन्दर्य बढ़ जाने पर उसे शब्दालंकार कहते है।

इसमे :- अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति

By Chalia Sir

(2) अर्थालंकार – जब काव्य में अर्थगत सौन्दर्य का समावेश रहता है, तब उसमें अर्थालंकार माना जाता है।

– उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, सन्देह, भ्रान्तिमान, दृष्टान्त और उदाहरण

(3) उभयालंकार – जब शब्द और अर्थ दोनों ही काव्य का सौन्दर्य बढ़ाते है, उसे उभयालंकार कहते है।

– पुनरूक्तवदाभास

⇒ शब्दालंकार :- (1) अनुप्रास अलंकार –

– जहाँ काव्य-पंक्ति में वर्णों की आवृत्ति एक से अधिक बार हो, चाहे स्वरों की समानता हो या विषमता, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

– जहाँ एक या अनेक वर्ण दो या दो से अधिक बार एक ही क्रम में रखे जाते है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

उदा० (1) भगवान ! भक्तों की भयंकर भूरि भीति भगाइये।
(उजली) (बड़ी) (भय) (दूर कीजिए।)

– प्रयुक्त काव्य पक्ति मे 'भ' वर्ण की आवृत्ति होने के कारण अनुप्रास अलंकार होता है।

(2) – 'छोरटी है गोरटी या चोरटी अहीर की।
(लड़की) (गोरी) (चंचल/[illegible]) (अहीर जाति की)

इसमें अन्तिम वर्ण 'ट' और 'र' की एक से अधिक बार आवृत्ति होने के कारण अनुप्रास अलंकार होता है।

(3) 'तरनि तनूजा तट तमाल तरूवर बहु छाये।'
(सूर्य) (यमुना की) (तट) (तमाल) (वृक्ष) (बहुत) (छाया)

– उपर्युक्त काव्य पंक्ति मे 'त' वर्ण की आवृत्ति पाँच बार हुई है, 'त' वर्ण की आवृत्ति होने के कारण अनुप्रास अलंकार है।

By Chahal Sir

(5) 'उसकी मधुर मुस्कान किसके हृदयतल में ना बसी।'

प्रस्तुत काव्य पंक्ति में 'मधुर मुस्कान' में 'म' वर्ण की आवृत्ति होने के कारण अनुप्रास अलंकार है।

⇒ अनुप्रास अलंकार के भेद :-

- अनुप्रास अलंकार के चार भेद है।

(1) छेकानुप्रास अलंकार – जहाँ कोई वर्ण दो बार आये, अर्थात वर्ण की एक ही बार आवृत्ति हो ~~जैसे~~ छेकानुप्रास अलंकार होता है।

उदा० - 'कानन कठिन भयंकर भारी'

- इसमें 'क' और '~~क~~' 'भ' वर्ण की एक बार आवृत्ति हुई है।

(2) वृत्यानुप्रास अलंकार – जहाँ वर्ण दो से अधिक बार आए वहाँ वृत्यानुप्रास अलंकार होता है।

उदा० - 'विरति विवेक विमल विज्ञाना'

- इसमें 'व' वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार हुई।

उदा० - भव्य भावों में भयानक भावना भरना नहीं।

उदा० - चारु चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही थी जल-थल में।

- इसमें 'च' व 'ल' वर्ण की आवृत्ति कई बार हुई है।

(3) श्रुत्यानुप्रास अलंकार – जहाँ एक ही उच्चारण स्थान वाले अधिक वर्ण हो, वहाँ श्रुत्यानुप्रास अलंकार होता है।

उदा० - तुलसीदास सीदत निस-दिन देखत तुम्हारि निठुराई।

- इसमें 'त' 'स' आदि वर्ण एक ही उच्चारण स्थान अर्थात दंत्य वर्ण है इस कारण श्रुत्यानुप्रास अलंकार होता है।

उदा० - दिनांत था, थे दिननाथ डूबते। (दंत्य वर्ण की आवृत्ति)

By Cholia Sir

(५) अन्त्यानुप्रास अलंकार – ~~छन्दों~~ छन्द के चरणों के अंत में जहाँ एक समान वर्णों का प्रयोग हो, वहाँ अंत्यानुप्रास अलंकार होता है।

उदा० - नभ लाली, चाली निसा, चटकाली धुनि कीन।

- इसमें अन्त में समान वर्णों की आवृत्ति होने के कारण -

उदा० - काली काली अलकों में, आलस-मद-नत पलकों में।

(२) यमक अलंकार – (शब्दालंकार) -

- जहाँ एक या एक ~~असे~~ से अधिक शब्दों की आवृत्ति हो, किन्तु उनके अर्थ भिन्न-भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है।

उदा० – "कनक (धतुरा) - कनक (स्वर्ण) ते सौगुनी मादकता अधिकाय,
वा खाये बौराय (पागल होना) जग, या पाय बौराय (पागल होना)"।

- उपर्युक्त दोहे में 'कनक' शब्द का प्रयोग दो बार हुआ है, किन्तु प्रथम 'कनक' शब्द का अर्थ 'धतुरा' है तथा द्वितीय 'कनक' शब्द का अर्थ स्वर्ण (सोना) के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, अतः यहाँ यमक अलंकार का प्रयोग है।

उदा० – 'काली घटा (बादल की घटा) का घमण्ड घटा (कम होना), नभ-मण्डल (आकाश मण्डल) तारक-वृन्द (तारों का समूह) खिले।'

- इसमें 'घटा' शब्द की आवृत्ति दो बार हुई है, किन्तु प्रथम घटा शब्द का अर्थ 'बादल की घटा' है जबकि द्वितीय 'घटा' शब्द का अर्थ 'कम हो गया' है, अतः यहाँ यमक अलंकार है।

उदा० – गुनी (गुणवान) - गुनी सब कहे, निगुनी (गुणहीन) गुनी न होत।
सुन्यों कहीं तरु अरक (अरका वृक्ष) ते, अरक समान उदोत (उत्पन्न होना, फल लगाना)॥

- इसमें गुनी शब्द की एक ही अर्थ में आवृत्ति हुई है, परन्तु 'अरक' शब्द एक बार 'आकड़े के पौधे' के लिए दूसरी बार 'सूर्य' के लिए आया है।

By Chadia Sir

उदा० - तो पर वारौ उरबसी सुनी राधिके सुजान।
(अप्सरा)
तू मोहन के उरबसी ह्वै उरबसी समान॥
(हृदय में बसने वाली) (आभूषण)

⇒ यमक अलंकार के भेद - (दो)

(1) सभंग यमक अलंकार (2) अभंग अलंकार

(1) सभंग यमक अलंकार – जहाँ शब्दांश की आवृत्ति पूर्व क्रम के अनुसार होती है, परन्तु शब्द को तोड़कर आवृत्ति देखी जाती है।

उदा० - "कर का मनका छाँड़ि के, मन का मनका फेर।"
(जपमाला) (मन का)

- इस उदाहरण में 'मनका' और 'मन का' शब्दांश की आवृत्ति हुई है, तथा अर्थ भिन्न भिन्न है। अतः सभंग यमक अलंकार है।

उदा० - "तो पर बारौ उरबसी, सुनी राधिके सुजान।
(अप्सरा)
तू मोहन के उरबसी, ह्वै उरबसी समान॥"
हृदय में बसने वाली आभूषण

(2) अभंग यमक अलंकार – जहाँ शब्दांश की पूर्ण आवृत्ति होती है तथा अर्थ भिन्न होता है, वहाँ अभंग यमक अलंकार होता है।

उदा० - तीन बेर खाती थीं वो तीन बेर खाती है।
(तीन बार खाना) (एक फल)
नगन जड़ाती थीं वो नगन जड़ाती हैं॥
(हीरा, मोति) (वस्त्रों के बिना)

- इसमें 'तीन बेर' दो बार व 'नगन जड़ाती' दो बार आया है, और इनका अर्थ भिन्न-भिन्न है – तीन बेर = तीन बार खाना
तीन बेर = एक फल
नगन जड़ाती = हीरा, मोति
नगन जड़ाती = वस्त्रों के बिना

उदा० - "तुम तारे तेते नभ में न तारे है।"
(उद्धार करना) (तारागण)

By Chdia Sir

(3) श्लेष अलंकार (शब्दालंकार) – काव्य में जहाँ शब्द का एक बार प्रयोग हो किन्तु ~~अर्थ~~ भिन्न-भिन्न अर्थ का बोध हों, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

उदा० – "रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरै, मोति, मानुस, चून ॥"
(चमक) (इज्जत) (जल)

– यहाँ पानी शब्द में श्लेष अलंकार है, मोति के सन्दर्भ में पानी का अर्थ चमक है, मनुष्य के संदर्भ में पानी का अर्थ इज्जत और चून के सन्दर्भ में पानी का अर्थ जल है। इस प्रकार 'पानी' एक शब्द का अनेक अर्थों मे प्रयोग किया गया है।

उदा० – "बलिहारी नृप कूप की गुन बिन बून्द न देइ।"
(राजा) (कुआँ)

– इसमें 'गुन' शब्द में श्लेष अलंकार है। गुन शब्द के यहाँ दो अर्थग्रहण किये गए है। नृप (राजा) के पक्ष में गुन का अर्थ – गुणवान/विशिष्ट तथा कूप (कुआँ) के पक्ष में गुन का अर्थ – रस्सी।

उदा० – मंगन को देखि पट देत बार-बार है।
(1)

– इसमें पट के दो अर्थ है, पहला अर्थ है – व्यक्तिवाचक को देखकर बार-बार वस्त्र देता है तथा दूसरा अर्थ व्यक्तिवाचक को देखते ही दरवाजा बंद कर लेता है। अत: यहाँ श्लेष अलंकार है।

⇒ श्लेष अलंकार के भेद – (दो)

(1) सभंग श्लेष अलंकार (2) अभंग श्लेष अलंकार

(1) सभंग श्लेष अलंकार – जहाँ शब्द के टुकडे करने से एक से अधिक अर्थ निकलें, वहाँ सभंग श्लेष अलंकार होता है।

By Chalia Sir

उदा० - 'अजौ तरयौना ही रह्यौ श्रुति सेवत इक अंग।'

- यहाँ 'तरयौना' में सभंग श्लेष अलंकार है। एक पक्ष में 'तरयौना' का अर्थ 'कान का आभूषण' है, और दूसरे पक्ष में 'तरयौना' का अर्थ 'तरा नहीं' अर्थात 'निष्कृष्ट जीव' है। दूसरा अर्थ 'तरयौं+ना' खण्ड करने पर ही प्राप्त होता है।

उदा० - 'को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के बीर।'

- इसमें वृषभानु+जा (पदभंग करने पर) - राधा
  वृषभ+अनुजा = बैल का अर्थ निकलता है।
- इसी प्रकार हलधर का बलराम व बैल अर्थ निकल रहा है।

(2) अभंग श्लेष अलंकार – जहाँ शब्द के टुकड़े किए बिना ही उससे कई अर्थ निकले वहाँ अभंग श्लेष अलंकार होता है।

उदा० - 'नवजीवन दो घनश्याम हमें'
(नया जीवन, जल) (कृष्ण, बादल)

- इसमें 'नवजीवन' तथा 'घनश्याम' शब्दों में ~~अलंक~~ अभंग श्लेष अलंकार है, क्योंकि ब्रज क्षेत्र और वर्षाऋतु के सन्दर्भ में इनके भिन्न-भिन्न अर्थ ग्रहण किये जा रहे हैं।

उदा० - 'सुबरन को ढूँढत फिरै, कवि, कामी अरु चोर।'

- इसमें सुबरन शब्द में अभंग श्लेष है –
(अच्छावर्ण)
  - इसमें सुन्दर अक्षर (कवि के साथ)
    सुन्दर रूप (कामी के साथ)
    सोना (चोर के साथ) के
    अर्थ लिया गया है।

By Chalia Sir

(5) विरोधाभास अलंकार -

परिभाषा - काव्य में जहाँ वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास प्रतीत हो, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है।

उदा० - "सुधि आये सुधि जाय।"

- प्रियतम की सुधि (याद) आने पर सुधि अर्थात् सुध-बुध या चेतना चली जाती है। यहाँ सुधि आने पर सुधि चली है - ऐसा कहने पर विरोध-सा प्रतीत हो रहा है, परन्तु अर्थ करने पर वास्तविक विरोध नहीं है।

उदा० - "मीठी लगै अँखियान लुनाई।"

- यहाँ पर आँखों का लावण्य मीठा प्रतीत होता है। लुनाई का अर्थ है लवणयुक्त अर्थात् खारा/खारापन यहाँ मीठा लग रहा है। यह विरोध कथन है, परन्तु लुनाई का तात्पर्य यहाँ पर सुन्दरता के रूप में प्रकट होने से विरोध समाप्त हो गया है।

उदा० - "या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहीं कोय।
ज्यों-ज्यों बूडे श्याम रंग त्यौं-त्यौं उज्जलु होय॥"

- इस उदाहरण में श्याम रंग में डूबने पर उज्ज्वल होने की बात कही गई है, जबकि व्यावहारिक जगत में श्याम रंग में डूबने पर वस्तु या व्यक्ति काला या श्याम ही होता है, उज्ज्वल नहीं। अतः वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास होने के कारण विरोधाभास अलंकार है।

By Chalid Sir

(5) संदेह अलंकार (अर्थालंकार) -

परिभाषा - जब किसी पद में समानता के कारण उपमेय में उपमान का सन्देह उत्पन्न हो जाता है और यह सन्देह अन्त तक बना रहता है तो वहाँ सन्देह अलंकार माना जाता है।

वाचक शब्द - कि, किंधौ, या, अथवा

उदा० - "सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है।
सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है॥"

- यह साड़ी के बीच नारी (द्रौपदी) है या नारी के बीच साड़ी है, अथवा साड़ी नारी की बनी हुई है या नारी साड़ी से निर्मित है।

- इस प्रकार अन्त तक संशयात्मक स्थिति उत्पन्न होने के कारण यहाँ सन्देह अलंकार है।

उदा० - "ये है सरस ओस की बून्दें या है मंजुल मोति।"

- प्रस्तुत पद में 'हंसिनी' अपने सामने छायी ओस की बून्दों को देखती है, परन्तु सादृश्यता (समानता, तुलना) के कारण वह यह निर्णय नहीं कर पा रही है कि ये 'ओस की बूँदे' है अथवा सुन्दर मोती है। इस प्रकार अंत तक संशय बने रहने के कारण यहाँ संदेह अलंकार है।

By Chalia Sir

(8) भ्रांतिमान अलंकार – (अर्थालंकार) -

परिभाषा - काव्य में जब सादृश्य के कारण उपमेय में उपमान के होने का भ्रम हो जाये, तब भ्रांतिमान अलंकार होता है।

उदा० - "ओस बिन्दु चुग रही हंसिनी मोती उनको जान।"

- प्रस्तुत पद में हंसिनी को ओस बिन्दुओं (उपमेय) में मोति (उपमान) का भ्रम उत्पन्न हो रहा है, अर्थात् वह ओस की बूंदो को मोती समझकर चुग रही है, अतएवं यहाँ भ्रांतिमान अलंकार है।

उदा० - नाक का मोति अधर की क्रान्ति से, बीज दाड़िम का समझ कर भ्रांति से।
देख कर सहसा हुआ शुक मौन है, सोचता है अन्य शुक यह कौन है ?

- यहाँ नाक के आभूषण के मोती में अनार (दाड़िम) के बीज का भ्रम उत्पन्न हो रहा है, अतः यहाँ भ्रांतिमान अलंकार है।

⇒ संदेह अलंकार और भ्रांतिमान अलंकार में अन्तर -

- सन्देह अलंकार में उपमेय और उपमान के मध्य अनिश्चय की स्थिति बनी रहती है, जबकि भ्रांतिमान अलंकार में उपमेय मे उपमान के होने का भ्रांतिवश निश्चय हो जाता है।

- यह मुख है या चन्द्रमा। (संदेह अलंकार)
- यह तो चन्द्रमा है। (भ्रांतिमान अलंकार)

By Chdia Sir

(6) विभावना अलंकार – (अर्थालंकार)

परिभाषा- काव्य में जहाँ कारण के न होने पर भी कार्य का होना वर्णित किया जाये, वहाँ विभावना अलंकार होता है।

उदा० - "बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना॥"

- इस उदाहरण में भगवान श्रीराम की महिमा का वर्णन है—

इसमें कहा है कि बिना पैरों के चलने, बिना कानों के सुनने, बिना हाथों के कार्य करने का वर्णन किया गया है, अर्थात् बिना कारण के ही कार्य सम्पन्न हो रहा है। अतः विभावना अलंकार है।

उदा० - "निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना निर्मल करै सुभाव॥"

उदा० - "देखो नील कमल से कैसे, तीखे तीर बरसते हैं।"

By Chotia Sir

(7) वक्रोक्ति अलंकार (

परिभाषा - जहाँ पर वक्ता के द्वारा बोले गए शब्दों का श्रोता अलग अर्थ निकलता है, तो उसे वक्रोक्ति अलंकार कहते है।

- वक्रोक्ति का अर्थ - वक्र+उक्ति अर्थात 'टेढ़ी उक्ति' होता है।
(कहने वाले का अर्थ कुछ और होता है, लेकिन सुनने वाला उससे कुछ दूसरा अर्थ निकाल लेता है।)

उदा० - भिक्षुक गो कित को गिरजे।
सो तो आँगन को बलिद्वार गयो री॥
है पशुपालन कहाँ सजनी।
जमुना-तट धेनु चराय रहो री॥

- माता लक्ष्मी दूसरे पद के बारे कहती है कि वह पशुपाल (पशुपति = शिव का एक नाम) कहाँ है? माता पार्वती पशुपाल का दूसरा अर्थ पशुओं का पालक कल्पित करके उत्तर देती है कि यमुना-तट के किनारे गायें चरा रहा होगा।

By Chalia Sir

उदा० - कौन द्वार पर? हरि मैं राधे!
क्या वानर का काम यहाँ?

- राधा भीतर से पूछती है कि बाहर तुम कौन हो? कृष्ण उत्तर देते है कि राधे मैं हरि हूँ, राधा हरि का अर्थ कृष्ण न लगाकर वानर लगाती है और कहती है कि इस नगर मे वानर का क्या काम? कृष्ण द्वारा एक अर्थ मे कहे गये 'हरि' शब्द का राधा दूसरा अर्थ 'वानर' कल्पित करती है।

⇒ वक्रोक्ति अलंकार के भेद - दो भेद

(1) काकु वक्रोक्ति - जब वक्ता द्वारा बोले गए शब्दों का उसकी कंठ ध्वनि के कारण श्रोता कुछ और अर्थ निकलता है, तो वहाँ काकु वक्रोक्ति अलंकार

होता है।

उदा० - कौन तुम ? मैं घनश्याम।
तो बरसो कित जाय ॥

~~उदा०~~ - कौन द्वार पर, राधे मैं हरि।
क्या कहा यहाँ ? जाओ वन में ॥

(2) श्लेष वक्रोक्ति अलंकार - जहाँ पर श्लेष की वजह से वक्ता के द्वारा बोले गए शब्दों का अलग अर्थ निकाला जाता है, तो वहाँ श्लेष वक्रोक्ति अलंकार होता है।

उदा० - को तुम हो इत आये कहाँ घनश्याम हो तो कितहूँ बरसो।
चितचोर कहावत है हम तो तहाँ जहुँ धन ~~ब~~ सरसों ॥

(4) अतिशयोक्ति अलंकार -

परिभाषा - जब किसी वस्तु, व्यक्ति आदि का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर किए जाए तब वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

उदा० - हनुमान की पूँछ मे लगन न पाई आग,
लंका सिगरी जल गई गए निशाचर भाग।

- इसमें कहा गया है कि हनुमान की पूँछ में आग लगने से पहले ही पूरी लंका जलकर राख हो गयी और सारे राक्षस भागे खड़े हुए।
यह बात बिलकुल असंभव है एवं लोक सीमा से बढ़कर वर्णन किया गया है।
अतः यह उदाहरण अतिशयोक्ति अलंकार का है।

उदा० - आगे नदियाँ पड़ी अपार घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार तब तक चेतक था उस पार ॥

- इसमें महाराणा प्रताप के सोचने की क्रिया खत्म होने से पहले ही चेतक ने नदियाँ पार कर लीं।
- इसमें बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन के कारण अतिशयोक्ति अलंकार है।

उदा० - धनुष उठाया ज्यों ही उसने, और चढ़ाया उस पर बाण।
धरा सिन्धु नभ काँपे सहसा, विकल हुए जीवों के प्राण ॥

By Chalia Sir

पत्र व प्रारूप लेखन

⇒ पत्रों के प्रकार – आवश्यकता और परिस्थिति के आधार पर पत्र कई प्रकार के होते हैं। सभी पत्रों को मोटे तौर पर दो वर्गों में रखा जाता है।

(1) औपचारिक पत्र – ऐसे पत्र ~~कार्याल~~ कार्यालयो मे तथा व्यवसाय में लिखे जाते हैं। प्रार्थना-पत्र, आवेदन-पत्र, किसी अधिकारी को पत्र, सार्वजनिक सूचना आदि से सम्बंधित पत्र इस वर्ग में आते हैं।

(2) अनौपचारिक पत्र – इसमें परिवार के सदस्यों, मित्रों एवं सम्बंधियों को लिखे जाने वाले व्यक्तिगत पत्र आते हैं।

(1) कार्यालयी पत्र – जो पत्र एक कार्यालय से दूसरे कार्यालयों को प्रेषित किए जाते है, उन्ही कार्यालय पत्र कहा जाता है।

(2) अर्द्ध-शासकीय पत्र या अर्द्ध-सरकारी पत्र –

– जब कोई अधिकारी अपने समकक्ष या ~~या~~ अधीनस्थ किसी दूसरे अधिकारी से व्यक्तिगत स्तर पर सरकारी या कार्यालयी कामकाज की कोई जानकारी चाहता है या किसी बात की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता है तो वह अर्द्ध-सरकारी पत्र कहलाता है।

By Chalia Sir

अर्द्ध-शासकीय पत्र

⇒ स्वयं को शासन सचिव, शिक्षा विभाग रवि कुमार मानते हुए राज्य के समस्त संस्था प्रधानों को 'गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा' की सुनिश्चितता हेतु एक अर्द्ध शासकीय पत्र का प्रारूप लिखिए।

शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार

पत्रांक – 25/शिक्षा/20.....   दिनांक-

प्रेषक –
शासन सचिव, शिक्षा विभाग,
राजस्थान सरकार
जयपुर।

प्रेषिति –
श्रीमान संस्था प्रधान,
समस्त राजकीय शिक्षण संस्थान,
राजस्थान।

विषय :– 'गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा' की सुनिश्चितता हेतु।

महोदय,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत सूचित किया है कि सभी विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित की जाए। इसके लिए विद्यालय के संस्था प्रधान आवश्यक कदम उठाएं एवं अपने विद्यालय में पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों को उपयुक्त गुणवत्ता युक्त शिक्षा देना सुनिश्चित करें। ताकि विद्यालय में छात्रों के नामांकन में वृद्धि हो सके और लोगों का ध्यान सरकारी विद्यालयों की ओर आकर्षित किया जा सके।

अतः अपने विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए 'गुणवत्तापूर्ण शिक्षा' सुनिश्चित करके अपने कर्तव्य का निष्ठा से पालन करें।

भवदीय
हस्ताक्षर-
रवि कुमार
(शासन सचिव शिक्षा विभाग)

By Chalia Sir

(2) स्वयं को प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बीकानेर मानते हुए निर्देशक, माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर को "स्वच्छता अभियान" हेतु बजट स्वीकृति के लिए एक अर्द्ध-शासकीय पत्र लिखिए।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
बीकानेर

पत्रांक:- 100/नि.मा.शि.बी./20....   दिनांक:- .....

प्रेषक-
प्रधानाचार्य,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
बीकानेर।

प्रेषिति-
निर्देशक,
माध्यमिक शिक्षा,
बीकानेर।

विषय:- स्वच्छता अभियान हेतु बजट स्वीकृति।

महोदय,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि हमारे विद्यालय परिसर में चारों ओर दीवार न होने के कारण चारों ओर कचरा एवं गंदा पानी फैला रहता है। जिसके कारण विद्यार्थियों को बहुत कठिनाई होती है। पिछले दिनों से कई बार यहाँ सफाई की जा चुकी है। लेकिन स्थायी समाधान नहीं निकल पाया है। आगामी स्वतन्त्रता दिवस से पूर्व इस ~~समस्या~~ समस्या के समाधान हेतु बजट की आवश्यकता है।

आशा है कि विद्यालय में ~~स्वच्छता~~ स्वच्छता अभियान चलाने हेतु और स्वतंत्रता दिवस से पूर्व विद्यालय को स्वच्छ बनाने के लिए आप शीघ्र ही बजट स्वीकृत करने का कष्ट करेंगे। ताकि यथाशीघ्र इस समस्या से मुक्ति पायी जा सके।

धन्यवाद

भवदीय
प्रधानाचार्य
रा.उच्च.मा.वि.
बीकानेर।

By Chalia Sir

'विज्ञप्ति'

- किसी सरकारी एवं गैर सरकारी विभाग द्वारा अपने किसी निर्णय, घोषणा, योजना, कार्ययोजना आदि से संबंधित सूचनाओं को संबंधित विभागों तथा आम जनता तक पहुँचाने के लिए जो आदेश जारी किये जाते है, उसे विज्ञप्ति कहते है।

(1) सचिव माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर की ओर से बोर्ड की पाठ्य पुस्तकें क्रय करने की सूचना हेतु विज्ञप्ति तैयार कीजिए।

क्रमांक:- 450/मा.शि.बो./20.... माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर

दिनांक:.....

विज्ञप्ति

समस्त पुस्तक विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि बोर्ड की पाठ्य पुस्तकें विक्रय के लिए उपलब्ध है। जिन पुस्तक विक्रेताओं ने पुस्तकें क्रय करने हेतु पूर्व में पंजीयन करवाया है। वे बोर्ड कार्यालय से पुस्तकें प्राप्त कर सकते है।

अतः आगामी सत्र हेतु जो पुस्तक विक्रेता पाठ्य पुस्तकें क्रय करना चाहते हैं। वे बोर्ड कार्यालय में आगामी 30 जुलाई 20.... तक सम्पर्क करें। शेष जानकारी के लिए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की वेबसाइट देखें।

सचिव

By Cholia Sir

निविदा

- निविदा को अंग्रेजी भाषा में "टेंडर" कहते है।
- सरकारी कार्यालयों अथवा गैर सरकारी प्रतिष्ठानों द्वारा सामान आपूर्ति या निर्माण या मरम्मत आदि कार्य के लिए कार्य सम्पन्न कर सकने वाले व्यक्ति या प्रतिष्ठानों को सूचना देने हेतु समाचार-पत्रों में इस कार्य से सम्बंधित जो आमंत्रण प्रकाशित किया जाता है। उसे निविदा कहते है।

⇒ अपने विद्यालय के लिए आवश्यक परीक्षा सामग्री हेतु निविदा तैयार कीजिए।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, साहवा (चूरू)

क्रमांक:- रा.उ.मा.वि./साहवा/20..../50/ दिनांक:-....

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, साहवा की ओर से निम्न हस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में निम्नलिखित सामान की आपूर्ति हेतु मुहरबंद निविदाएँ आमंत्रित की जाती है। इस हेतु निविदा पपत्र दिनांक:-10 दिसम्बर 20--- को दोपहर 2:00 बजे तक कार्यालय से प्राप्त किए जा सकते हैं और दिनांक:-11 दिसम्बर को शाम 4:00 बजे तक सील बन्द लिफाफे में कार्यालय में जमा करवाए जा सकते है। निविदा अगले दिन 12 दिसम्बर 20-- को दोपहर 3:00 बजे सभी निविदादाताओं के समक्ष खोली जाएँगी। इस निविदा के लिए आवश्यक परीक्षा सामग्री निम्न प्रकार से है –

क्र.स.	सामान का विवरण	अनुमानित राशि	धरोहर राशि	निविदा शुल्क	आपूर्ति का समय
1.	उत्तर पुस्तिकाएँ 12 पेज -2000, 8 पेज - 3000	20,000	4000	200	10 दिन.
2	धागे 20 गट्टे				
3.	पेन लाल - 2 दर्जन नीला - 2 दर्जन काला - 1 दर्जन				
4.	सुतली 5 किलो				

By Chalia Sir

आवश्यक शर्तें -

1. सशर्त निविदाएँ मान्य नहीं होंगी।
2. आपूर्ति में विलम्ब या गुणवत्ता में कमी होने पर निविदादाता के विरूद्ध कार्यवाही की जाएगी।
3. बिना कारण बताएँ निविदाएँ निरस्त या स्वीकृत करने का अधिकार निम्न हस्ताक्षर कर्ता का होगा।

हस्ताक्षर
प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक
विद्यालय साहवा (चूरू)

ज्ञापन

- सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों के बीच आपस में सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए जो औपचारिक पत्र व्यवहार होते है, उन्हें कार्यालय ज्ञापन कहा जाता है।

ज्ञापन का प्रारूप

सरकार का नाम
(1) मंत्रालय / निदेशालय / विभाग का नाम व स्थान

(2) ज्ञापन संख्या

(3) दिनांक....

(4) ज्ञापन

(5) विषय....

(6) मध्य भाग

(7) ज्ञापन देने वाले के हस्ताक्षर व पदनाम

(8) सेवा में,
प्राप्ति अधिकारी का पदनाम
विभाग का नाम

By Chalia Sir

⇒ शिक्षा विभाग, शासन सचिवालय की ओर से सचिव माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को पाठ्यक्रम में विसंगतियों को दूर करने हेतु एक ज्ञापन प्रस्तुत कीजिए।

ज्ञापन

शिक्षा विभाग
शासन सचिवालय

पत्रांक/क्रमांक....   दिनांक....

ज्ञापन

विषय :- माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में विसंगतियों बाबत।

महोदय,

माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में कई विसंगतियाँ सामने आ रही है। अतः विस्तृत समीक्षा के उपरान्त ही नवीन पाठ्यक्रम लागू करे, ताकि अनावश्यक विवाद पैदा न हो। इस सन्दर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मुख्य उद्देश्यों का पूर्णतः पालन किया जाना चाहिए।

हस्ताक्षर
शासन सचिव

सेवा में,
श्रीमान सचिव महोदय,
मा० शि० बोर्ड. अजमेर
राजस्थान

By Chalia Sir

"अधिसूचना"

⇒ सरकार द्वारा निर्मित नियमों एवं आदेशों को जब आम जनता एवं संबंधित व्यक्तियों तक पहुँचाने के लिए राजपत्र (गजट) में प्रकाशित किया जाता है, तो वह अधिसूचना कहलाती है।

⇒ स्वायत्त शासन विभाग शासन सचिवालय की ओर से समस्त सरकारी विभागाध्यक्षों को स्वच्छता अभियान चलाने हेतु एक अधिसूचना लिखिए।

अधिसूचना
राजस्थान सरकार,
स्वायत्त शासन विभाग,
शासन सचिवालय,
जयपुर।

क्रमांक.....   दिनांक....

महामहिम राज्यपाल की अनुशंसा के आधार पर राज्य सरकार आदेश क्रमांक 33/12(द)/स्वच्छता 56, दिनांक..../..../2026 की अनुपालना में गांधी जयंती पर प्रदेश के समस्त नगर निगमों, नगर परिषदों व नगरपालिकाओं द्वारा सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत स्वच्छ नगर, स्वच्छ आवास अभियान चलाया जाएगा। अभियान में जन-सहभागिता महत्वपूर्ण रहेगी।

हस्ताक्षर
क.ख.ग
उपशासन सचिव

प्रतिलिपि सूचनार्थ –

(1) समस्त विभागाध्यक्ष, राज० सरकार, जयपुर।

(2) समस्त जिला कलक्टर।

By Chand Sir